आर. एन. आई – राजहिन/2003/9899 डाक पंजीयन संख्या – श्रीगंगानगर/105/2014-2016

मासिक पत्रिका

अजायब बानी

वर्ष : बारहवां | अंक : नौवां | जनवरी-2015

भजन गाने का महत्त्व 4

शहर का रास्ता 7

सवाल-जवाब 27

प्रेरणा 33

संपादक-प्रेम प्रकाश छाबड़ा
099 50 55 66 71 (राजस्थान)
098 71 50 19 99 (दिल्ली)

उप संपादक-नन्दनी

विशेष सलाहकार-गुरमेल सिंह नौरिया
099 28 92 53 04
096 67 23 33 04

सहयोग-परमजीत सिंह

स्वत्वाधिकारी, प्रकाशक, मुद्रक व संपादक :
प्रेम प्रकाश छाबड़ा ने नेशनल प्रिन्टर्स, नारायणा,
नई दिल्ली से छपवाकर सन्तबानी आश्रम
16 पी.एस. रायसिंह नगर – 335 039
जिला – श्री गंगानगर (राजस्थान) से प्रकाशित किया।

e-mail : dhanajaibs@gmail.com

Website : www.ajaibbani.org

प्रकाशन दिनांक 1 जनवरी 2015 -154-

मूल्य – पाँच रुपये

परम सन्त अजायब सिंह जी महाराज

भजन गाने का महत्त्व

सब पर दया करो (3) गुरु पाल,
सब के कष्ट हरो (3) गुरु पाल,
सब पर दया करो,

1. हम बालक तुम पिता हमारे, तुम बिन बिगड़ी कौन सवारे, (2)
तम्स हरो गुरु ज्योति जगाओ, भटक रहे हैं राह दिखाओ, (2)
भुला दिया अगर तुमने ही हमको, कौन करेगा ध्यान,
सब पर दया करो .....

2. मानव बनकर हम जी पाऐं, इस धरती पर स्वर्ग सजाऐं, (2)
कटे पाप की काली कारा, बहे नाम की अमृत धारा, (2)
सब संगत का मान बढ़े नित, सबका हो कल्याण,
सब पर दया करो .....

3. जिसके मन में मूरत तेरी, जिसके मुँह पर तेरा नाम, (2)
पलक झपकते बन जाते हैं, उसके बिगड़े सारे काम, (2)
दया मेहर हो जाऐ तेरी, मेरा बन जाऐ काम,
सब पर दया करो .....

4. कृपाल गुरु बस इतना वर दो, तन मन धन सब निर्मल कर दो, (2)
हर दुविधा से हो छुटकारा, सब में दीखे रूप तुम्हारा, (2)
सच्चे मन से करे तुम्हारा, 'अजायब' गुणगान,
सब पर दया करो .....

परमपिता परमात्मा सावन-कृपाल के चरणों में नमस्कार है जिन्होंने हमें अपना यश और भक्ति करने का मौका दिया। गुरु अर्जुनदेव जी महाराज ने प्यार भरे लफ्ज़ों में कहा है, ''वह जुबान काट दें जो गुरु का यश नहीं करती। वे कान बंद कर दें जो गुरु के दिए हुए नाद-शब्द को नहीं सुनते। वे आँखें निकाल दें जो सतगुरु के स्वरूप की चोर हैं गुरु का दर्शन करके खुश नहीं होती।''

सच तो यह है कि करण-कारण परमात्मा हमारे ऊपर दया करे तभी हम उसके प्यार और तड़प के गीत गा सकते हैं। मैंने **भजनों के महत्त्व** के बारे में बहुत कुछ बताया है जिसे आप लोगों ने मैगजीन में भी पढ़ा है कि भजन बोलने कितने जरूरी होते हैं। भजन बोलना, अभ्यास से कम नहीं होता।

महाराज कृपाल कहा करते थे, ''अभ्यास में बैठने से पहले ऐसा भजन बोलें जो आपकी आत्मा के अंदर तड़प पैदा करे।'' भजन बोलना गुरु के आगे अपनी नम्रता जाहिर करने का बहुत अच्छा मौका है। हम गुरु के आगे अपने ऐब गिन-गिनकर बताते हैं कि हमारा भूला हुआ मन कब मानता है कि मैंने ये गुनाह किए हैं!

जब हम सिमरन के जरिए नौं द्वारे खाली करके पूरी तरह आँखों के पीछे एकाग्र होकर आत्मा से तीनों पर्दे उतार लेते हैं तब उस जगह पहुँच जाते हैं जहाँ से गुरु पावर आई हुई है। सच्ची नम्रता, सच्ची आजजी और गुरु के लिए सच्चा प्यार उस जगह जाकर ही पैदा होता है; उससे नीचे-नीचे हम सन्तों की लिखी हुई प्रार्थनाएं बोलते हैं।

सन्त-महात्मा हम जीवों की कमजोरी को अच्छी तरह जानते हैं। शब्दों के रूप में उनकी पवित्र आत्मा से जो कल्पना उठ रही होती है वह उनकी सच्ची तड़प और सच्ची आजजी होती है। अगर हम अपने जीवन को उस मुताबिक ढ़ाल लें तो हम भी उन प्रार्थनाओं से फायदा उठा सकते हैं।

आम लोग जो कविताएं लिखते हैं वह मन-बुद्धि की कल्पना होती है। हम जितनी कल्पना करते हैं उतने पवित्र नहीं होते क्योंकि यह कल्पना काम, क्रोध, लोभ, मोह और अहंकार से लिपटे हुए हृदय से आती है। परमगति को प्राप्त सन्तों ने अंदर गुरु पावर को देखकर उसमें मिलकर उसका रूप होकर ही वह प्रार्थना लिखी होती है। हमें भी उनकी प्रार्थना से फायदा उठाना चाहिए अगर हम खुष्क लोगों की कविता पढ़ेंगे तो हम भी खुष्क हो जाएंगे, हमारे ऊपर भी वैसा ही असर होगा।

आपको पता है जब प्रेमी आते हैं तो सारे मिलकर भजन बोलते हैं। आज आपकी भजन बोलने की बारी है। जिसे भजन बोलने की इजाजत मिल जाती है वह भजन माला में से पन्ना नम्बर जरूर बोले ताकि दूसरे प्रेमियों के लिए किताब में से भजन ढूंढ़ना आसान हो जाए।

***

सतसंग - परम सन्त अजायब सिंह जी महाराज

शहर का रास्ता

फरीद साहब की बानी

मुम्बई

मैं अक्सर कहा करता हूँ कि यह फुलवाड़ी शहन्शाह कुलमालिक बाबा सावन सिंह जी की है। आप बड़े प्यार से हमें घरेलू मिसालें देकर समझाया करते थे। हम जीव जिन चीजों में फँसे होते हैं सन्त हमें ऐसी ही उदाहरणें देकर समझाते हैं।

बाबा सावन सिंह जी एक बादशाह के लड़के की मिसाल दिया करते थे कि उनका लड़का बुरे लड़कों की संगत में पड़कर पढ़ाई का चोर बन गया, पढ़ता नहीं था। माता-पिता को फिक्र हुआ कि हम राजघराने के मालिक हैं अगर हमारा लड़का पढ़ेगा नहीं तो यह राजकाज का काम नहीं चला सकेगा, राज्य को बर्बाद कर देगा। उन्होंने अच्छे से अच्छा टीचर रखा लेकिन किसी भी टीचर को कामयाबी हासिल नहीं हुई जो उस बच्चे को विद्या दे सकता।

आखिर किसी ने उन्हें सुझाव दिया कि हम संसारी जीवों से जो गुत्थी न सुलझती हो महात्मा उस मसले का हल निकाल देते हैं क्योंकि महात्मा तजुर्बेकार होते हैं वे प्यार से जिंदगी का मसला हल कर देते हैं। बादशाह ने महात्मा के पास जाकर कहा कि मेरा लड़का पढ़ाई का चोर है मेरे जाने के बाद इसके सिर पर बहुत जिम्मेवारियां पड़ेगी यह किस तरह राजकाज संभालेगा?

महात्मा ने बादशाह से कहा, ''कोई बात नहीं तू इस लड़के को हमारे पास छोड़ दे हम इसे पढ़ा देंगे।'' बादशाह महात्मा की बात सुनकर हैरान हुआ कि महात्मा इसे कैसे पढ़ा देंगे! महात्मा ने सबसे पहले लड़के की आदत को समझा। महात्मा ने लड़के से

पूछा, ''बेटा! तुझे किस चीज का शौक है? हम वही काम करेंगे।'' लड़के ने कहा कि मुझे कबूतर उड़ाने का बहुत शौक है। महात्मा ने कहा मुझे भी बचपन में यही शौक था। महात्मा बहुत से कबूतर ले आए फिर महात्मा ने कहा कि अगर हम इन कबूतरों को कोई दुनियावी नाम नहीं देंगे तो हमें कैसे पता लगेगा कि इनमें से कौन सा बीमार है कौन सा तंदरूस्त है? किसने आसमान में उड़ान भरी हुई है और किसने अभी उड़ान भरने की तैयारी करनी है इसलिए हमें इन कबूतरों के नाम रखने चाहिए।

लड़का महात्मा की बात से सहमत हो गया क्योंकि उसके शौक की बात हो रही थी। महात्मा ने किसी कबूतर का नाम क तो किसी का नाम ख रख दिया। सब कबूतरों के नाम रखने के बाद महात्मा ने कहा कि कबूतर ज्यादा हैं अब हम इन अक्षरों को जोड़कर इनके नाम रख देते हैं। लड़का अक्षरों को जोड़कर कबूतरों को नाम से बुलाने लगा और उन अक्षरों को याद करने लगा। महात्मा ने लड़के को पढ़ने के लिए कायदा फिर छोटी किताब दी जिसमें बच्चों के लिए अच्छी-अच्छी कहानियां थी। आखिर बच्चे का शौक बढ़ गया वह समझदार हुआ तो उसने खुद ही कबूतरों का ख्याल छोड़ दिया।

महाराज सावन सिंह जी कहा करते थे, ''सन्तों के पास जीवों के लिए अनेक किस्म के सुझाव होते हैं। वे हर तरीके से जीव को समझ लेते हैं कि इसकी रूचि किस तरफ है, यह किस मर्ज का बीमार है; इसे क्या दवाई दें।''

हमारे साथ भी जिंदगी में कई ऐसे वाक्यात हो जाते हैं अगर हमारी कोई कीमती चीज धन-दौलत गिर जाए तो हम एकदम दिल पकड़कर बैठ जाते हैं कि अब वह वस्तु कहाँ से लेंगे?

एक आदमी ने जल्दबाजी में ढ़ीली सी गाँठ देकर अपने पल्ले में हीरा बांध लिया। रास्ते में वह गाँठ खुल गई और हीरा गिर गया। वह आदमी भागते हुए फरीद साहब के पास आकर बोला, ''आप महात्मा लोगों को अंतर्यामता होती है, मेरा हीरा गुम हो गया है आप मुझ पर दया करें, बताएं?'' फरीद साहब ने कहा, ''सज्जना! हीरा तेरी लापरवाही से गिरा है अगर तू इसे कीमती समझता तो अच्छी तरह गाँठ लगाता आज तुझे परेशानी न होती।''

यह तो आपने एक दुनियावी मिसाल दी है। यह इंसानी जामा बहुत कीमती है अगर हमें यह ज्ञान हो जाए कि यह कीमती हीरा-इंसानी जामा खरीदने से भी नहीं मिलता, मुफ्त में जा रहा है। अगर हम समझदार हों तो उस प्रभु परमात्मा गुरु के साथ पक्का प्यार लगा लें ताकि हमारा यह जीवन सफल हो जाएं।

जे जाणा लड़ छिजणा पीडी पाईं गंढ।।
तैं जेवड मैं नाहिं को सभ जग डिट्ठा हंढ।।

फरीद साहब कहते हैं अगर हम जीवों को समझ हो तो हम गुरु परमात्मा के साथ प्यार की जंजीर को कसकर गाँठ लगा लें कि कहीं यह खुल न जाए, पता नहीं कब मन इस जंजीर को तोड़ देगा! आप फिर कहते हैं, ''हे सतगुरु! मैं सारी दुनिया घूम आया हूँ, मुझे संसार में तेरी तरह कोई नहीं मिला।''

फरीदा जे तू अकल लतीफ, काले लिख न लेख।।
आपनड़ै घर जाईऐ पैर तिनां दे चुंम।।

हमें जिंदगी में जरूरत के लिए कई जगह जाना पड़ता है। एक बार फरीद साहब कचहरी में गए। हमें पता है कि वहाँ हर आदमी ने रिश्वत के लिए किस तरह मुँह खोला हुआ है, किसी को तनख्वाह

याद नहीं। वहाँ मुंशी पैसे लेकर अगले के हक में फैसला करता था। फरीद साहब का यह पहला ही वाक्या था। फरीद साहब उसे संबोधन करके कहते हैं, ''प्यारेया! तू इतना चतुर-स्याना, पढ़ा-लिखा है लेकिन रिश्वत लेकर अपनी आत्मा को क्यों दागी कर रहा है? तू ऐसे कर्म क्यों कर रहा है जिनका हिसाब तुझे ही चुकाना पड़ेगा। तू अपने दिल में झांककर देख कि इन कर्मों को कौन भोगेगा, इनका हिसाब-किताब कौन चुकाएगा?''

फरीदा जो तैं मारन मुक्कीआं तिनां न मारें घुंम।।
आपनड़ै घर जाईऐ पैर तिनां दे चुंम।।

फरीद साहब ने अपनी जिंदगी का बहुत सा हिस्सा तप-अभ्यास में बिताया। आप तप में मस्त थे। वहाँ से एक अहंकारी गुजरा, वह रास्ता भूल गया था, उसने इशारे से फरीद साहब से पूछा, ''**शहर को कौन सा रास्ता जाएगा**?''

हमें पता है कि अभ्यासी आदमी हमेशा मौत को याद रखते हैं। फरीद साहब ने कब्रों की तरफ इशारा करके कहा, ''शहर को यही रास्ता जाता है।'' वह आदमी काफी दूर तक गया लेकिन आगे कब्रें ही कब्रें थी। उसके दिल में ख्याल आया कि महात्मा ने मेरे साथ मजाक किया है, क्यों न इसे मजाक की सजा दी जाए। उस आदमी ने आकर फरीद साहब को कई थप्पड़ मार दिए लेकिन फरीद साहब मालिक की मौज में हँसते रहे। उस आदमी ने फरीद साहब से पूछा कि महात्मा जी मैंने आपको इतने थप्पड़ मारे हैं लेकिन आपने बुरा नहीं माना।

फरीद साहब ने कहा, ''भाई! मैंने तुझे जो कुछ बताया था वह सही है क्योंकि कब्र ही असली शहर है हर आदमी ने यहाँ आकर

बसना है।'' मालिक के प्यारों के अंदर नम्रता होती है। वे ईंट का जवाब पत्थर से नहीं देते बल्कि कहते हैं कि प्यारेया! तेरा भला हो।

हमारे सतगुरु महाराज सावन सिंह जी कहा करते थे, ''अगर हम अपने मतलब के लिए चुप कर जाएं, थप्पड़ भी खा लें कि किसी न किसी तरह हमारा मतलब हल हो जाए तो ऐसी नम्रता भी एक धोखा है।'' महात्मा प्यार से कहते हैं कि नम्रता सच्ची-सुच्ची और ऊँची होनी चाहिए। सच्ची नम्रता परमात्मा को मंजूर होती है। आप कभी भी किसी का बुरा न सोचें। लालची आदमी दूसरे आदमी को डराता है और लालची आदमी ही डरता है। गुरु साहब कहते हैं:

भय काहूं को देत नेह भय मानत आन।

मालिक के प्यारे न किसी को भय देते हैं न किसी से भय समझते हैं। उन्हें हमेशा ही अपने गुरुदेव का भय होता है कि कोई ऐसा काम न हो जाए जिससे मेरे गुरु का नाम बदनाम हो या मेरा गुरु नाराज हो जाए। आम कहावत है:

माड़ा कुत्ता खसमे गाल।

फरीदा जां तौ खटण वेल तां तू रत्ता दुनीं स्यों।।
मरग सवाई नींह जां भरया तां लदया।।

फरीद साहब उपदेश करते हैं, ''प्यारेया! यौवन अवस्था में परमात्मा से मिलने का मौका था, तब तू विषय-विकारों और दुनिया की मान-बड़ाई हासिल करने में लगा रहा। जब बुढ़ापा आया मौत सामने खड़ी दिखाई दी फिर पछताकर परमात्मा की तरफ लगा कि अब मैं किस तरह परमात्मा को खुश करुं?'' नशहरा में जल्लण जट्ट अच्छी कमाई वाला हुआ है, वह कहता है:

छोटे होंदया डंगर चारे, वड्डे होयां हल वाया।
बुढ़े होके माला फेरी, ते रब दा ऊलांबा लाया।।

बूढ़े होकर हम कहते हैं कि हे परमात्मा! तू यह न कहना कि हमने तेरी भक्ति नहीं की। हमें पता है कि बूढ़े के ऊपर सारे परिवार का बोझ होता है। वह बैठा हुआ कभी कुछ सोचता है, कभी कुछ सोचता है। स्वामी जी महाराज कहते हैंः

मूर्ख ने यह भार उठाया, अब दुखन से बहु घबराया।

किसने इससे कहा था कि तू यह बोझ उठा? अब घबराता है कभी बेटा कहना नहीं मानता, कभी बहु कहना नहीं मानती। बेटे की मौत हो जाती है रात को नींद नहीं आती तो अपनी चोटी खींचता है। पत्नी नाराज हो जाती है तो उसे मनाने में समय लग जाता है। आप देखें! यहाँ कौन खुश है? तूने अपने भजन-अभ्यास का समय खराब कर लिया, अब बूढ़ा हो गया है मौत सिरहाने खड़ी है। घर के लोग कहते हैं इसे गीता सुनाओ सुखमनी साहब सुनाओ। हमें ये सारे उपाय तो पहले करने चाहिए थे।

देख फरीदा जो थीआ दाढ़ी होई भूर।।
अग्गो नेड़ा आया पिच्छा रहया दूर।।

फरीद साहब प्यार से कहते हैं कि देख प्यारेया! तेरे सिर और मुँह के बाल सफेद हो गए हैं। बचपन, जवानी गुजर गई अब बुढ़ापा आ गया है। तेरी मौत का समय नजदीक आ गया है; पैदाईश का समय दूर रह गया है। गुरु नानकदेव जी कहते हैंः

यमराजे दे हेरु आए माया संगल बंध लिया।

शुरू में औरत-मर्द के कान के नजदीक के बाल थोड़े से सफेद होते हैं। ये सफेद बाल कान के पास आकर कहते हैं कि तूने जवानी तो खराब कर ली अब भजन कर ले लेकिन हम उन बालों को बनावटी रंग लगाकर काला कर लेते हैं। मौत का देवता रंग नहीं

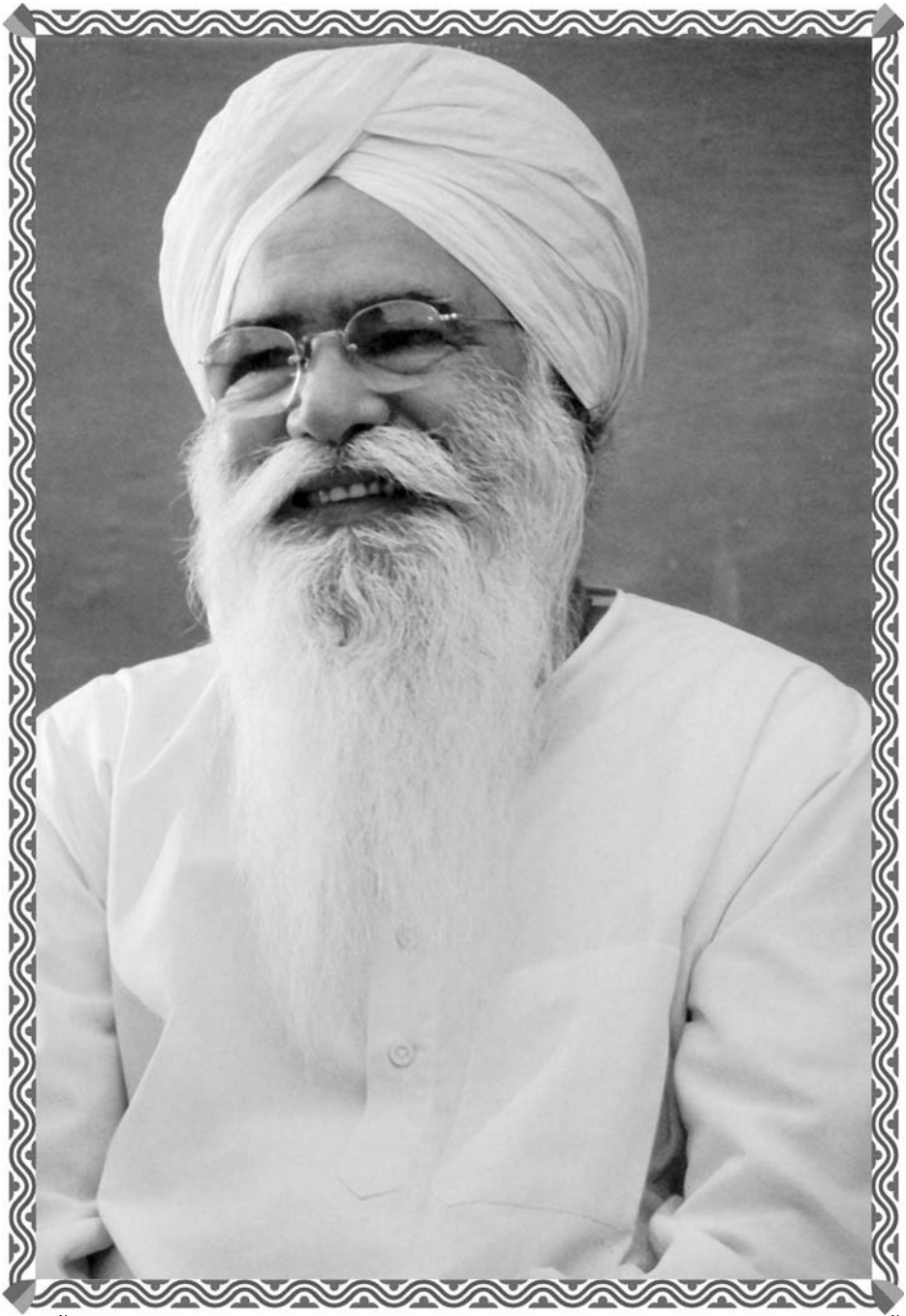

देखता। श्वाँस घट रहे हैं तृष्णा बढ़ रही है अगर नाम मिला हुआ है उस समय भी भजन करता है तब भी गुरु के आगे अनेक ही समस्याएं रखता है कि मेरी यह पूरी करें वह पूरी करें।

महाराज सावन सिंह जी कहा करते थे, ''अगर गुरु शिष्य की ऐसी दुनियावी जरूरतों को सुने तो गुरु करोड़ो जन्मों में भी शिष्य को लेकर नहीं जा सकता।'' हमारा और सन्तों का रास्ता शब्द-नाम, परमार्थ और रूहानियत का है। सन्त कभी भी दुनियादारी में दखल नहीं देते। सन्त यह सुझाव देते हैं कि मेहनत करो, उद्यम करो; उद्यमी आदमी दुनियादारी के काम में सफल होता है और परमार्थ में भी सफल होता है।''

देख फरीदा जे थीआ सक्कर होई विस।।
सांईं बाझों आपणे वेदण कहीऐ किस।।

आप कहते हैं, ''गुरु के बिना, नाम के बिना बेशक इंसान जुबान से कितनी भी मीठी कथनी क्यों न कर ले वह कामयाब नहीं हो सकता। जिन भोगों को हम शक्कर, चीनी और शहद की तरह मीठा समझते थे बुढ़ापा आने पर भोगों में भी रस नहीं आता।''

आखिरी वक्त पीड़ा होती है आत्मा शरीर से निकलती नहीं। सारी जिंदगी इन्द्रियों के भोग मीठे समझकर भोगे अब ये जहर की तरह कड़वे लगते हैं। गुरु मिला नहीं, नाम मिला नहीं अब किस साईं के आगे अपना दुख रोए! किससे कहे मेरी संभाल कर?

फरीदा अक्खीं देख पतीणीआं सुण सुण रीणे कंन।।
साख पकंदी आईआ होर करेंदी वंन।।

फरीद साहब प्यार से कहते हैं दुनिया के रूप-रंग देख-देखकर आँखों की नजर कमजोर हो गई फिर भी ये संतुष्ट नहीं। मीठे

सुहावने राग सुनकर कान बहरे हो गए हैं, घर के लोग मशीन लेकर आते हैं कि किसी तरह बुजुर्ग से बात करें। बूढ़ा हो जाता है कान पर मशीन लगा लेता है फिर भी कहता है कि मैं सिनेमा जाकर राग सुनूं।

जब खेती पक जाती है किसान उसे काट लेता है। हमारी भी यही हालत है आँख और कान भी जवाब दे जाते हैं फिर भी जीवन की आशा रखता है। उस समय भी अनेक शिकायतें है कि भजन करने से गोडे-गिट्टे दुखते हैं, ख्याल नहीं टिकता। मौत सिरहाने खड़ी आवाज देती है। काल की ताकत हमें भरमा रही है लेकिन जानी दुश्मन मन हमें अंदर नहीं जाने देता बाहर ही रखता है।

फरीदा कालीं जिनीं न राविआ धौलीं रावै कोय।।
कर सांईं स्यों पिर हड़ी रंग नवेला होय।।

फरीद साहब कहते हैं, ''अगर आपने यौवन अवस्था हाथ से निकाल ली है बूढ़े हो गए हो फिर भी आप 'शब्द-नाम' की कमाई करें तो आपको नाम का रंग चढ़ जाएगा। किसी भी उम्र में परमात्मा को याद करें परमात्मा आपकी भक्ति को परवान करेगा।''

महाराज सावन सिंह जी हमेशा ही कहा करते थे, ''परमात्मा मेहर करे अगर जवानी में ही नाम मिल जाए, हमें हिम्मत करके उस समय मीठे चावलों पर हाथ मार लेना चाहिए। अभ्यास करके मन-इन्द्रियों के घाट से ऊपर आ जाना चाहिए अगर जवानी चली गई है तो बुढ़ापे को न जाने दें।''

ध्रव, प्रह्लाद छोटे बच्चे थे, उन्होंने भक्ति की परमात्मा ने उन्हें अपने चरणों में जगह दी। गुरु अमरदेव जी महाराज बहत्तर साल की उम्र में गुरु चरणों में आए। आपने तन-मन से 'शब्द-नाम' की

कमाई की। आपने श्रद्धा प्यार से लंगर की सेवा की, पानी भरकर लाते रहे। गुरु ने आपको जो हुक्म दिया आपने गुरु के हुक्म की पालना की। आपके गुरु ने आपको अपनी गद्दी सौंप दी। आप किसी भी अवस्था में परमात्मा को याद करें परमात्मा आपको कुबूल करने के लिए तैयार है।

फरीदा काली धौली साहिब सदा है जे को चित करे।।
आपणा लाया पिरम न लगई जे लोचै सभ कोय।।
एह पिरम प्याला खसम का जै भावै तै देय।।

गुरु अमरदेव जी महाराज फरीद साहब को प्यार से कहते हैं देख भई सज्जना! अगर जवानी में नाम मिल जाए तो परमात्मा से मिलना बहुत आसान होता है। बूढ़ा जो काम देर से करता है जवान वही काम जल्दी कर लेता है। अगर बूढ़ा दो घंटे कमर सीधी करके भजन में बैठ सकता है तो जवान आठ-दस घंटे कमर सीधी करके भजन कर सकता है। जवानी में भक्ति करनी इतनी मुश्किल नहीं जितनी बुढ़ापे में है।

अमरदेव जी को बुढ़ापे में गुरु की शरण मिली थी। यह अपने बस की बात नहीं कि हम नाम को जब चाहे प्राप्त कर लें। यह तो भुलावा है, यह परमात्मा ने अपने हाथ में रखा है कि प्यार का प्याला किसे और कब देना है; किसका वक्त आया हुआ है?

मैं बताया करता हूँ कि यह परमात्मा का खुद का न्याय होता है कि किस आत्मा को दुनिया में ख्वार करना है, किस आत्मा को अपने साथ जोड़ना है। परमात्मा ने जिन आत्माओं को अपने साथ जोड़ना होता है उनमें ही नामदान की ख्वाहिश पैदा होती है, वही आत्माएं नामदान प्राप्त कर सकती हैं। गुरु के लिए दूर या नजदीक

का कोई फर्क नहीं पड़ता। गुरु चाहे समुद्र पार करके जाए, पहाड़ो की चोटियों पर जाए या उस आत्मा को अपने पास बुलाए।

हमारे हुजूर महाराज परम पिता कृपाल कहा करते थे, ''जो पहाड़ की चोटी पर खड़ा है उसे पता है कि आग किस जगह भड़क रही है।'' इसी तरह महात्मा ऊपर सचखण्ड में बैठे हुए देख रहे हैं कि किस आत्मा में तड़प है, मैंने किससे मिलना है। जिस आत्मा का वक्त आ जाता है, महात्मा उस पर नाम का रंग चढ़ा देते हैं।

हमारे हुजूर महाराज कृपाल कहा करते थे, ''इंसान का बनना ही मुश्किल है भगवान को पाना मुश्किल नहीं। परमात्मा अच्छे इंसान की तलाश में है।'' मैं बचपन से ही पूरे महात्मा की तलाश में था, मैं कई महात्माओं के पास गया। इसी खोज में मुझे बाबा बिशनदास जी से 'दो-शब्द' का भेद मिला। आपने मेरी जिंदगी की अच्छी नींव डाली। मैंने जमीन के अंदर बैठकर बहुत साल तक अभ्यास किया मुझे सच्चाई की तलाश थी लेकिन तृप्ति नहीं हुई।

एक वक्त था जब महाराज सावन ने मुझसे कहा था, ''दूसरी मंजिल से ऊपर की वस्तु देने वाला खुद तेरे घर आएगा।'' मैं उस वक्त की इंतजार में बैठा था। उसे पता था कि कौन मेरी याद में कहाँ बैठा है? जब वक्त आया तो उसने खुद ही अपना एक सेवक मेरे पास भेजा जिसने आकर कहा, ''महाराज! तेरे आश्रम में आना चाहते हैं।'' मुझे बहुत खुशी हुई कि उस महान सावन का कहना ठीक था। मैं अठारह साल से जमीन के अंदर बैठा था वह खुद ही आकर मिला, परमात्मा गुरु सबको देखता है।

गुरु अमरदेव जी महाराज कहते हैं परमात्मा जिसके ऊपर खुश हो जाता है उसे प्यार का प्याला दे देता है। जिसे यह बड़ाई

देनी है कि तू जिसे नाम देगा मैं उसे अपने चरणों में रखूंगा; यह उस मालिक ने अपने हाथ में रखा हुआ है।

फरीदा जिन लोयण जग मोहया से लोयण मैं डिठ।।
कजल रेख न सहंदियां से पंखी सूय बहिठ।।

एक बार फरीद साहब कब्रिस्तान से गुजर रहे थे, वहाँ किसी का शव बाहर निकाला हुआ था। कई बार ऐसा हो जाता है कि कुत्ते शव को बाहर निकाल लेते हैं। उस शव का माँस कीड़ो ने खत्म किया हुआ था, आँखों वाली जगह पर जाले लगे हुए थे। जाले में छोटे-छोटे जानवरों ने अंडे और बच्चे दिए हुए थे। यह देखकर फरीद साहब अफसोस से कहते हैं कि जिन आँखों से हम दुनिया को मोह लेते हैं, पत्नि पति को और पति पत्नि को मोह लेता है। इन आँखों में ही सब कुछ है।

ओ अक्ल के अंधे देख ज़रा, तैनूं सतगुरु दित्तियां अक्खियां ने।
हर कदम ते ठोकर खाना ऐं, ऐहे अक्खियां कास नूं रखियां ने।
कई मारे मर गए अक्खियां दे, कई तारे तर गए अक्खियां दे।
ऐ ज़हर ते अमृत अक्खियां विच, ऐ रमजां किसने लिखियां ने।।

हमारे हिन्दुस्तान में आमतौर पर लड़कियाँ आँखो में काजल लगाती हैं अगर काजल मोटा हो तो वह आँखो में रिड़कने लग जाता है। जो आँखे मोटे काजल को भी नहीं सहती थी आज उन आँखों के अंदर जानवरों ने अपने घौंसले बनाकर बच्चे दिए हुए हैं। अफसोस! अगर तूने भजन किया होता इस जिंदगी में परमात्मा से मिला होता तो आज तेरा पिंजर इस तरह बर्बाद न होता।

फरीदा कूकेंदया चांगेंदया मत्तीं देंदयां नित।।
जो सैतान वंझाया से कित फेरह् चित।।

फरीद साहब कहते हैं मालिक हमेशा ही अपने प्यारे महात्माओं को संसार में भेजता है। महात्मा सतसंग के जरिए हम लोगों को समझाते हैं कि प्यारेयो! आप बहे जा रहे हैं, बचें इस संसार में से कोई भी आपके साथ नहीं जाएगा। पति पत्नी के मुँह की तरफ देखता रह जाता है पत्नी चली जाती है। इसी तरह पत्नी पास खड़ी होकर देखती रह जाती है पीटती है कि तेरे बिना मेरा कौन है? लेकिन कोई मदद नहीं कर सकता। माता-पिता बैठे हैं, बच्चे चले जाते हैं। महात्मा होका देकर कहते हैं कि इस संसार में आपका कौन है? गुरु तेगबहादुर साहब कहते हैंः

जगत में झूठी देखी प्रीत।
अपने ही हित स्यों सब लागे क्या दारा क्या मीत।
मेरो मेरो सबहों कहत है हित स्यों बाँधयो चीत।
मन मूर्ख अजे न समझायो सिख दा हारयो नीत।
नानक भौजल पार परे जे गाए प्रभु दे गीत।।

अगर आप परमात्मा का भजन करें तभी इस भवसागर से पार हो सकते हैं। महात्मा बार-बार जोर देकर हमें समझाते हैं कि कौन सी चीज आपके फायदे की है? गुरु रामदास जी कहते हैंः

सन्तों सुनों सुनों जन भाई गुरु काढ़े बाँह कुकीजे।

जिस तरह मल्लाह अपने बेड़े को समुद्र के किनारे खड़ा करके लोगों को होका देकर कहता है कि जिन्होंने समुद्र की लहरों से बचकर दूसरे किनारे जाना है वे मेरे बेड़े में आकर बैठ जाएं। मैं तजुर्बेकार हूँ, मेरी जिम्मेवारी है कि मैं इस बेड़े को दूसरे किनारे पर लगा दूंगा; आप सही सलामत पहुँच जाएंगे।

जैसे मल्लाह होका देता है उसी तरह गुरु भी संसार में नाम का बेड़ा लेकर आता है। गुरु कहता है, ''प्यारेयो! मुझे परमात्मा

की तरफ से आर्शिवाद मिला हुआ है अगर आप इस नाम के बेड़े में बैठ जाएंगे तो आप भी पार हो जाएंगे।''

जे आत्म को सुख सुख नित लोड़ो तो सतगुरु शरण पवीजे।

अगर आप अपनी आत्मा को शान्ति देना चाहते हैं, परमात्मा के साथ मिलाना चाहते हैं तो आप महात्मा की शरण प्राप्त करें।

फरीदा कूकेंदयां चांगेंदया मत्ती देंदयां नित।।
जो सैतान वंझाया से कित फेरह् चित।।

जिन्हें काल ने बहकाया हुआ है वे इस दुनिया को और दुनिया के पदार्थों को सच्चा समझते हैं कि मौत तो और लोगों के लिए है। काल के बहकावे में आए हुए लोग कहते हैं कि सोचेंगे अगर समय मिला तो महात्मा से नाम ले आएंगे। वे अपनी प्लेनिंगे ही बनाते रह जाते हैं, मौत आकर गला दबा देती है। गुरु नानकदेव जी महाराज कहते हैंः

मनमुख जे समझाईए भी औजड़ जाए।

जिन्हें शैतान मन ने उल्ट तरफ लगाया हुआ है, आप उन्हें चाहे जितना मर्जी प्यार-प्रेम से समझा लें वे परमार्थ की तरफ आ ही नहीं सकते। आप कहते हैंः

मनमुख ते गुरमुख दा हो नहीं सकदा मेल।
वक्खों वक्ख दोहां दा रस्ता ज्यों पानी ते तेल।
ईक डोबे दूजा तारे ऐह है अजब प्रभु दा खेल।
ईक बाप दे दो बेटे एक पास ते दूजा फेल।।

मनमुख और गुरमुख दोनों ही परमात्मा के बच्चे हैं। जिस तरह एक स्कूल में एक पिता के दो बच्चे जाते हैं, एक अच्छी तालीम हासिल करके अफसर बन जाता है और दूसरा जानवरों की तरह

फिरता रहता है। यह प्रभु का अजब खेल है जिस तरह पानी और तेल का मिलाप नहीं होता। उसी तरह नाम के रसिए और दुनियादारों का मिलाप नहीं हो सकता। महात्मा दुनिया के कर्मकांडो को छिलका और नाम की कमाई को गिरी प्राप्त करना कहते हैं। मालिक के प्यारे हमेशा ही हमारा ख्याल छिलके से हटाकर गिरी की तरफ लगाना चाहते हैं। स्वामी जी महाराज भी कहते हैंः

पानी मथे हाथ कुछ नाहीं, खीर मथन आलस भारा।

चाहे आप पानी में जितना मर्जी मधानी घुमा लें उसमें से मक्खन नहीं निकलेगा। जब दूध में मधानी घुमाएंगे तभी मक्खन निकलेगा। हम दूध बिलोने में आलस्य करते हैं क्योंकि हम 'सुरत-शब्द' का अभ्यास करने में आलसी हैं। गुरु नानकदेव जी कहते हैंः

बुरे काम को उठ खलोया, नाम की बेला पै पै सोया।

शैतान ने जिन्हें गुमराह किया हुआ है चाहे उन्हें महात्मा कितना भी समझा लें, अच्छे से अच्छा वेद-शास्त्र सुना लें उन्होंने मानना ही नहीं।

फरीदा थीओ पवाही दभ।। जे साईं लोडह् सभ।।
इक छिजेंह् बिआ लताड़ीऐ।। तां सांईं दै दर वाड़ीऐं।।

किसी आदमी ने फरीद साहब के पास आकर विनती की, ''महात्मा जी! मुझे परमात्मा को पाने का साधन और तरीका बताएं, क्या मुझे उसके दरबार में जाने का मौका मिल सकता है?''

फरीद साहब एक बहुत अच्छी मिसाल देकर समझाते हैं, ''देख प्यारेया! अगर तू परमात्मा को प्राप्त करना चाहता है तो तू अपने मन को घास की तरह बना ले। कोई घास को पैरों से लताड़ता है, कोई दाती से काटता है, कोई घास को पीसकर

उसकी चटाई बना लेता है लेकिन घास किसी को बुरा नहीं कहता सबके साथ प्यार करता है। प्रेमी लोग सतसंग में चटाई पर बैठकर भजन-अभ्यास करते हैं। ऐसा करने से तुझे साईं के दरबार में जाने का मौका मिल जाएगा। भजन करने वाले को महात्मा की कुछ शर्तें अवश्य पूरी करनी पड़ती हैं। लोकलाज छोड़नी पड़ती है। लोगों के ताने-मेहणे झेलने पड़ते हैं। पदवी का ख्याल भी छोड़ना पड़ता है और मन जो हमारा जबरदस्त दुश्मन है इसके साथ लड़ाई मोल लेनी पड़ती है।'' तुलसी साहब कहते हैंः

तुलसी रण में जूझना घड़ी एक का काम।
नित उठ मन से जूझना बिन खंडे संग्राम।।

रण में मर जाना या मार देना एक घड़ी का ही काम है मन के साथ बिना हथियार रोज का ही संग्राम है। सतगुरु ने हमें शब्द-धुन के हथियार के साथ लैस किया हुआ है। गुरु नानकदेव कहते हैंः

मैं ते पंज जवान, गुरु थापी दित्ती कंड जिओ।

हमारे मन और आत्मा की सीट तीसरे तिल, हमारी आँखों के पीछे है। पाँचो डाकू- काम, क्रोध, लोभ, मोह और अहंकार की स्थूल बैठक भी यहीं सूक्ष्म त्रिकुटी में है बेशक आत्मा अकेली है लेकिन तू अंदर होकर देख तेरा पूरा गुरु तेरे साथ है। तुझे जिस चीज की जरूरत होगी गुरु अंदर ही पूरी करेगा यह उसकी ड्यूटी है। आप अंदर जाकर देखें! आपको आपका गुरु पहले मिलेगा अगर आप परमात्मा के दरबार में जाना चाहते हैं तो अपने अंदर नम्रता, प्यार और आजजी पैदा करें।

फरीदा खाक न निंदीऐ खाकू जेड न कोय।।
जीवंदयां पैरां तलै मोयां उपर होय।।

मैं बताया करता हूँ हमेशा वही आदमी दूसरे की निंदा करता है जिसे कोई लालच हो। कमाई वाले महात्मा उन पर भी दया करते हैं और परमात्मा के आगे अरदास करते हैं कि तू इन्हें बख्श दे! कहीं ये अपना जीवन न तबाह कर लें। महात्मा हमेशा अपने सेवको को भी इस रोग से बचाते हैं।

महाराज सावन सिंह जी कहा करते थे, ''हर इन्द्री में कोई न कोई स्वाद है। निन्दा न खट्टी है न मीठी है इसमें कोई स्वाद नहीं फिर भी इसने हर किसी को परेशान किया हुआ है।''

किसी ने फरीद साहब की निन्दा की। फरीद साहब के पास क्या है, आप लोग उनके पास क्यों जाते हो? फरीद साहब निन्दा करने वाले को निन्दा में जवाब नहीं देते बल्कि कहते हैं, '' प्यारेया! निन्दा तो खाक की भी नहीं करनी चाहिए। खाक भी बहुत शक्तिशाली है। जीते जी तो खाक लोगों के पैरों के नीचे है, मौत आने पर कब्र में ऊपर हो जाती है इसलिए खाक से भी डरें।''

अगर कोई बुराई करता है तो उसे सजा देने वाला परमात्मा बैठा है। परमात्मा अच्छा कर्म करने वाले को भी देख रहा है और बुरा कर्म करने वाले को भी देख रहा है परमात्मा जानता है कि किसको ईनाम देना है किसको सजा देनी है।

फरीदा जा लब तां नेंह क्या लब त कूड़ा नेंह।।
किचर झत लंघाईऐ छप्पर तुटै मेंह।।

कोई आदमी फरीद साहब की नकल कर रहा था। उसने कभी अभ्यास नहीं किया था अंदर रसाई नहीं थी। सबको दिखाने के लिए आँखें बंद करके बैठता परमार्थ की बातें करता, माया का पुजारी था। हमेशा ही अमीर लोगों की तलाश में रहता था कि

अमीर लोग मेरे चेले बनें अच्छा चढ़ावा चढ़े। हर किसी से कहता कि लंगर नहीं चलता और संगत के लिए मकान नहीं है।

फरीद साहब उस आदमी के अंदर की हालत देखकर कहते हैं, ''प्यारेया! तूं लोगों को दिखाने के लिए आँखें बंद करके बगुले की तरह समाधि लगाकर बैठता है लेकिन तेरा दिल माया की तरफ लगा हुआ है; एक म्यान में दो तलवारे कैसे रह सकती हैं? तेरे मन में तो लालच है परमात्मा के साथ प्यार कैसे हो सकता है? एक बात ही हो सकती है परमात्मा के साथ प्यार कर सकता है या अपने लोभ की हवस को पूरा कर सकता है।''

आप कहते हैं, ''झोंपड़ी टूटी हुई है बारिश हो रही है उस झोपड़ी में कितनी देर बैठकर समय बिताएगा। तुझे विषय-विकारों का रोग लगा हुआ है क्योंकि हराम का खाने से अंदर हराम ही पैदा होता है। इंसान का पिंजर तो ऐसे ही दिखाई देता है लेकिन अंदर से काम, क्रोध, लोभ, मोह और अहंकार ने खोखला किया हुआ है।'' गुरु नानकदेव जी कहते हैं:

काम क्रोध काया को गाले, ज्यों कंचन सोहागा ढ़ाले।

तेरी काया खराब हो चुकी है तू बूढ़ा हो गया है लेकिन अभी भी तेरा ख्याल भोगों से नहीं हटता। तू कितना समय इस शरीर में बैठकर परमात्मा के साथ प्यार करने का दम मारेगा?

फरीद साहब हमें घरेलू मिसालें देकर बहुत प्यार से समझाते हैं कि हम सच्चे-सुच्चे होकर गुरु के साथ प्यार करें। सन्त-सतगुरु जो रास्ता बताते हैं हम ईमानदारी से सच्चे दिल से नाम की कमाई करें। गुरु ने हमें नाम के जहाज में बिठाया है ताकि उसे हमें ले जाना आसान हो जाए। कबीर साहब कहते हैं:

दीन दयाल भरोसे तेरे सब परिवार चढ़ायो बेड़े।
जे तिस भावे हुक्म मनावे इस बेड़े को पार लंघावे।।

महात्मा अपने गुरुदेव के भरोसे इस बेड़े को संसार में ठेल देते है कि हे मालिक! तू ही इन आत्माओं को भेजने वाला है तू ही इनका इंतजाम करता है; तू ही इन्हें अपने चरणों में जगह दे सकता है। तेरी मर्जी है तू इनसे अभ्यास करवा या न करवा, हम तेरी दया से तेरे आसरे बैठे हैं।

जब इंसान दुनिया के सारे सहारे छोड़कर सिर्फ गुरु के सहारे हो जाता है तब गुरु को भी हमारी संभाल का फिक्र हो जाता है अगर हम अपना ख्याल बच्चे की तरह बनाएं तो गुरु हमारी हर बात पूरी करता है।

जे गुरु झिड़के तां मीठा लागे, बख्शे तां गुरु वडयाई।
लोग सलाहे तो तेरी उपमा, निन्दे छोड़ न जाई।।

यह कह लेना आसान है अगर गुरु डाँटे तो मीठा लगे। गुरु की डाँट उन्हें प्यारी लगती है जो अपने अंदर ऐब देखते हैं। वे कहते हैं कि हमारे अंदर ऐब होगा तभी गुरु हमें डाँटते है अगर गुरु बख्श देता है तो यही भी उसकी बड़ाई है। अगर लोग हमारी उपमा करते हैं कि यह अच्छा है तो इसमें भी तेरी बड़ाई है हम तो इस काबिल नहीं थे कि अच्छे बन जाते यह तो तेरी महिमा है।

अगर लोग निन्दा करते हैं तो क्या हमने तेरा दरवाजा, तेरी बड़ाई छोड़ देनी है! हमें तो तेरे वैराग का, तेरे प्यार का, तेरी महिमा गाने का रोग लग गया है, अब यह छूट नहीं सकता।

अमली जीवे अमल खाए त्यों हर जन जीवे नाम ध्याए।

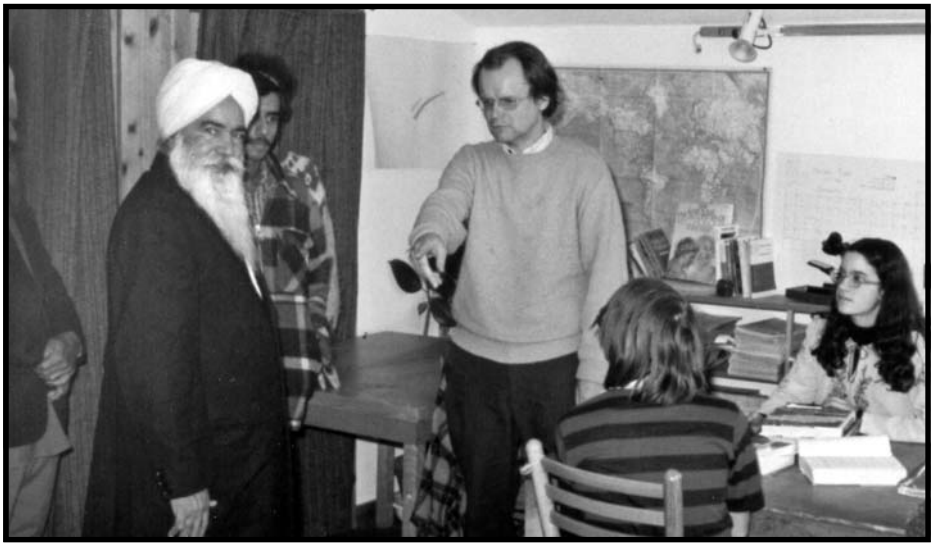

जिस तरह अमली अमल में ही अपनी जिंदगी समझता है। वह जानता है अगर मैं नशा नहीं करूंगा तो मर जाऊंगा मेरे शरीर में दर्द होगा इसी तरह मालिक के प्यारे उस मालिक की गुरु की महिमा गाते हैं। उनके जीवन में भी वही लय चलती है। वे जब परमात्मा को भूल जाते हैं तो मौत महसूस करते हैं कि ये साँस बेकार चल रहे हैं। जो दम गाफिल था वही काफिर हो गया है। गुरु नानकदेव जी कहते हैं:

ईक छिन विसरे स्वामी जानो बरस पचासा।

अगर मालिक एक सैंकिड जितना भी विसर जाता है तो पचास सालो जैसा बिछोड़ा पड़ जाता है। हम भी फरीद साहब की तरह अपने दिल में उठते-बैठते, सोते-जागते, अपने गुरुदेव को याद करें। अंदर जाकर उसकी सच्ची महिमा को देखें कि वह हमारे लिए दरवाजा खोलता है, हमें गले लगाता है। वह प्यार देने के लिए ही आता है। हमें इस जीवन से फायदा उठाना चाहिए।

***

DVD - 80

परम सन्त अजायब सिंह जी महाराज द्वारा प्रेमियों के सवालों के जवाब

सवाल-जवाब

एक प्रेमीः- *जिस तरह महाराज कृपाल सिंह जी अंतरी दर्शनों और आवाज के बारे में बताया करते थे क्या आप हमें उसी तरह अंदर की रोशनी और आवाज के बारे में कुछ बताएंगे?*

बाबा जीः- परमपिता परमात्मा सावन-कृपाल के चरणों में नमस्कार है जिन्होंने हमें अपनी याद में बैठने और अपना यश करने का मौका दिया है। मैंने स्वामी जी महाराज और गुरु नानकदेव जी की बानी पर सतसंगों में इस बारे में बहुत कुछ बोला है। आप सन्तबानी मैगजीन जरूर पढ़ा करें ताकि आपकी तसल्ली हो जाए।

जो सन्तमत की बात करता है उसका निशाना अंदर के लिए ही होता है बाहर तो सिर्फ मिसाल देने के लिए ही बोला जाता है। कल गुरु नानकदेव जी की बानी पर सतसंग था। जिसमें गुरु नानकदेव जी ने समझाया, जिस तरह नदी अपने सोमे से बिछड़कर समुद्र में जा मिलती है इसी तरह परमात्मा से बिछड़ी हुई आत्मा 'शब्द' पर सवार होकर ही परमात्मा के साथ मिल सकती है।

हमें पता है कि पानी सूरज की तपिश से भाप बनकर उड़ता है। यह पानी कितनी ऊँची-नीची जगह, पत्थरों-गड्ढों से गिरता हुआ बहुत ठोकरे खाता हुए लम्बा सफर तय करके फिर कहीं अपने सोमें समुद्र में जाकर मिलता है। कई बार पानी को बहुत देर तक किसी गंदगी में भी रहना पड़ता है फिर जब कहीं बारिश होती है तो वही पानी नदी-नालों से होता हुआ समुद्र में जाकर गिरता है फिर कोई पहचान नहीं सकता कि यह नदी का पानी है या समुद्र

का पानी है, वे एक हो जाते हैं। गुरु अर्जुनदेव जी महाराज मिसाल देकर समझाते हैं:

ज्यों जल में जल आए खटाना, त्यों ज्योति संग मिल ज्योत समाना।

अगर हम एक दीपक के नजदीक दूसरा बड़ा दीपक जला दें तो कोई उस प्रकाश को पहचान नहीं सकता कि छोटी ज्योत कौन सी है और बड़ी ज्योत कौन सी है? इसी तरह पता नहीं हमारी आत्मा ने उस समुद्र परमात्मा से बिछुड़कर कितनी बार पौधों, मच्छरों, कीड़ों, सांप और कौवों की योनियां पाई। कितनी बार यह आत्मा पति या पत्नी बनी। कभी यह पूर्व में जाकर पैदा हुई तो कभी पश्चिम में जाकर पैदा हुई। कभी इसने सुख के साँस लिए तो कभी दुख और बीमारियों में जिंदगी भर सड़ती रही।

आत्मा न जन्मती है न मरती है लेकिन जिस तन के अंदर इसका निवास है वह तन रोगी है। जब हम रोगी जगह में रहेंगे तो हमारे ऊपर उसका असर जरूर होता है। जिस तरह अग्नि में लोहा डाल दें बेशक लोहा जलता नहीं लेकिन उसे अग्नि का सेक तो झेलना ही पड़ता है।

प्यारेयो! आत्मा ने जिस 'शब्द' पर सवार होकर जाना है जिसकी सोहबत करके इसने अपने सोमे सच्चखंड में जाना है वह 'शब्द' गाने-बजाने वाला, लिखने-पढ़ने और बोलने वाला नहीं है। वह किसी भाषा का भी लफ्ज़ नहीं है, वह लिखने-पढ़ने से ऊपर है। उस शब्द को समुंद्र कह लें या उसे समुंद्र से उठने वाली आवाज कह लें वह आवाज हम जीवों के माथे के पीछे धुनकारें देती है।

मैं पहले भी कई बार बता चुका हूँ कि जहाँ से यह दरिया अपने सोमें में से निकलता है इसकी और आवाज होती है, जब

यह पानी पत्थरों में से जाकर निकलता है तो इसकी और आवाज हो जाती है। जब यह पानी साफ जमीन पर आ जाता है तो इसकी और आवाज हो जाती है लेकिन जब यही पानी समुंद्र में जाकर गिरता है, पानी पानी में मिल जाता है तो इसकी कोई और आवाज हो जाती है। पानी एक ही सोमे से निकलता है लेकिन उसे जैसा-जैसा वातावरण मिलता है जैसी-जैसी धरती मिलती है वैसे ही उसकी आवाज बदल जाती है।

इसी तरह सच्चखंड से एक ही 'शब्द' उठता है लेकिन हर मंडल में उसकी आवाज बदल जाती है। जन्म-जन्मांतरों से हमारा ख्याल बाहर भटका हुआ हैं। परमात्मा ने हमारी आँखों के पीछे पर्दा लगाकर हमें बाहर निकाला हुआ है इसलिए हम बाहर की आवाजों में लगे हुए हैं। सन्त हमें बताते हैं कि आपके अंदर कई किस्म की आवाजें आती हैं; आप उनमें से कोई एक आवाज चुन लें। उस आवाज को रोज-रोज न बदलें बेशक वह आवाज साँय-साँय की ही क्यों न हो! वह छोटी सी आवाज ही आपकी आत्मा को ऊपर ले जाएगी, ऊपर जाकर कोई शक नहीं रहता क्योंकि आवाज तो एक ही है।

प्यारेयो! हमारे अंदर आवाज इतनी जबरदस्त गूंज रही होती है कि शुरू-शुरू में हम उस आवाज को सहन नहीं कर सकते। कई प्रेमी फरियाद करते हैं कि 'शब्द' ज्यादा गूंजता है। हमें शब्द इसलिए नहीं खींचता क्योंकि हमारा ख्याल बाहर फैला हुआ है, हम रोज-रोज आवाज को नहीं सुनते। सतसंगी आवाज की महानता को नहीं समझता अगर सतसंगी खींचने वाली कशिश की रेंज में आ जाएं तभी शब्द उसे खींचेगा। अगर लोहा चुम्बक की रेंज में होगा तभी चुम्बक लोहे को खींचेगा अगर लोहा दूर है या लोहे में जंग

लगा हुआ है तो चुम्बक उसे नहीं खींचेगा। हमें बुरे कर्मों और पापों की जंग लगी हुई है, सिमरन की महानता का पता नहीं।

सिमरन हमारे पापों की मैल उतारता है, आत्मा का शीशा सिमरन से ही चमकता है। जिस तरह झाड़ू मकान को साफ करता है उसी तरह सिमरन हमारे अंदर से सारे गंद धोकर बाहर निकाल देता है। आत्मा साफ होगी तभी हम इसके अंदर अपना मुँह देख सकेंगे और इसे 'शब्द' भी आसानी से खींच लेगा।

सन्त कहते हैं कि सिमरन के जरिए नौं द्वारे खाली करें। जब आप 'शब्द' के साथ जुड़ जाते हैं तो शब्द ऊपर खींच लेता है, सिमरन का मतलब यहाँ पहुँचना है। सिमरन में शन्ति है सुख है। सिमरन करने से दिल को ठंडक पहुँचती है लेकिन हमारे सतसंगियों को सिमरन की महानता का ज्ञान नहीं। जिन्हें सिमरन की ताकत का पता लग जाता है वे एक सैकिंड भी सिमरन छोड़ने के लिए तैयार नहीं होते। गुरु अर्जुनदेव जी महाराज कहते हैंः

सिमरो सिमर सिमर सुख पावो, कल क्लेश तन माहे मिटावो।

आपके अंदर जो बुरे ख्याल उठते हैं और बुरे स्वप्न आपको परेशान करते हैं, ये सारे ही सिमरन करने से समाप्त हो जाएंगे। सिमरन करने से आपको शान्ति मिलेगी और जब स्वप्न आएगा तो गुरु का ही स्वप्न आएगा।

बहुत सारे सन्तों ने सिमरन को जप कहकर भी बयान किया है। पहले हम जुबान से सिमरन करते हैं फिर धीरे-धीरे मन की जुबान से सिमरन होना शुरू हो जाता है तब रस बढ़ जाता है। इसी तरह मन की जुबान से सिमरन करते-करते आत्मा की जुबान से सिमरन करने लगते हैं। अगर परमात्मा का सिमरन जुबान पर

आ जाए तो आपको कई-कई घंटे पता ही नहीं लगेगा कि हमें सिमरन करते हुए इतनी देर हो गई है। पैदल चलते हुए कई-कई मील तक पता ही नहीं लगता। कबीर साहब कहते हैंः

जाप मरे अजपा मरे अनहद भी मर जाए।
सुरत समानी शब्द में ताको काल न खाए।।

फिर इस जुबान से करने वाला जाप समाप्त हो जाता है, आत्मा 'शब्द' के ऊपर सवार हो जाती है, 'शब्द' के साथ जुड़ जाती है। जब हम इससे भी ऊपर चले जाते हैं तब हमारी आत्मा और शब्द के बीच कोई भिन्न-भेद नहीं रहता। जब आत्मा उस जगह पहुँच जाती है फिर दोनों हाथ खड़े करके कह सकते हैं कि मेरी आत्मा काल के जाल से आजाद हो गई है; काल भी सिर फेर लेता है कि अब यह आत्मा मेरे जाल से निकल गई है।

जब सेवक की आत्मा 'शब्द' के साथ जुड़ जाती है शब्द रूप हो जाती है तब गुरु की ड्यूटी खत्म हो जाती है। गुरु खुश होता है कि एक आत्मा तो काल के जाल से निकली है।

प्यारे बच्चों! सिमरन करने में कोई कीमत नहीं लगती। बच्चे खेलते भी हैं और एक दो तीन चार भी करते जाते हैं। इसी तरह आप बातें करते हुए भी सिमरन कर सकते हैं। सिमरन करते हुए आपको कोई बोझ नहीं उठाना होता। आप ट्रेन, हवाई जहाज में सफर करते हुए भी सिमरन कर सकते हैं।

***

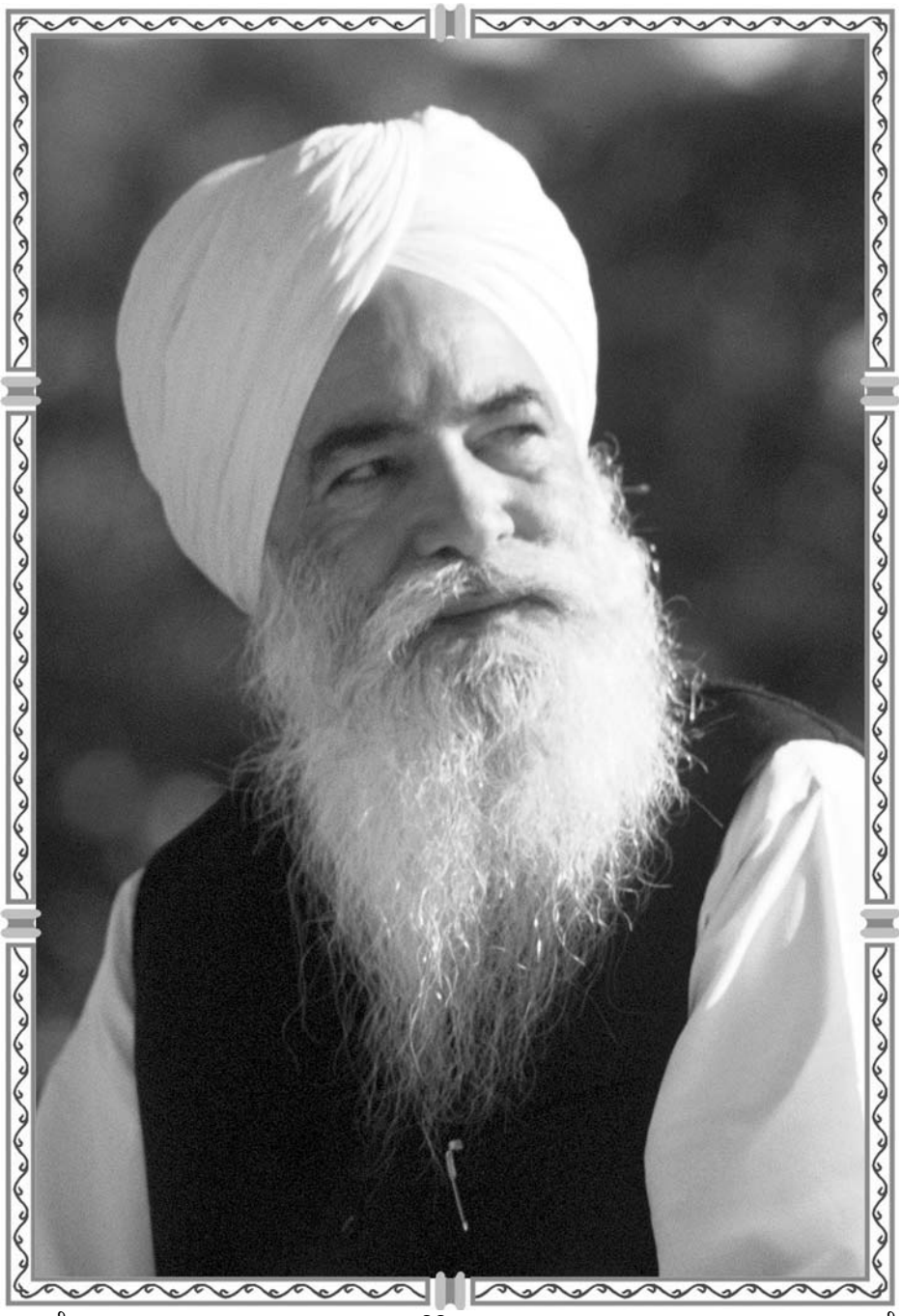

परम सन्त अजायब सिंह जी महाराज के मुखारविन्द से

प्रेरणा

उस परमात्मा करण-कारण शब्द रूप दयालु कृपाल का धन्यवाद है। आप हमारी तड़पती आत्माओं की तड़प बुझाने के लिए संसार में देह धारण करके आए। आपने हमें भक्ति करने और अपनी याद में बैठने का मौका दिया। यहाँ भजन-सिमरन का जो कार्यक्रम आपकी दया और आपकी इजाजत से रखा गया था वह इस समय समाप्त है।

*आपको एक सप्ताह **प्रेरणा** दी गई है कि इस मंडल में हमारी क्या कमियां हैं और उन कमियों को छोड़ना कितना जरूरी है? आत्मा के शीशे को साफ करने के लिए भजन-सिमरन करना कितना जरूरी है। मैं आप सबकी वापसी यात्रा की शुभकामना करता हूँ।*

मैं आशा करता हूँ कि आप लोग अपने घरों में जाकर अपने परिवार के सदस्यों को भी मेरा प्यार और हमदर्दी दें ताकि वे भी आपकी बातें सुनकर फायदा उठाएं; उन्हें भी गुरु पर भरोसा आए।

प्यारेयों! आप महाराज जी के वाक के मुताबिक डायरी रखेंगे और भजन-सिमरन करेंगे; आपको संसार में जो जिम्मेवारियां मिली हैं उन्हें भी पूरा करेंगे।

***

धन्य अजायब

16 पी.एस. आश्रम में सतसंगों के कार्यक्रमः

2, 3, 4, 5 व 6 फरवरी 2015

27, 28 फरवरी व 1 मार्च 2015

31 मार्च, 1 अप्रैल व 2 अप्रैल 2015